UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

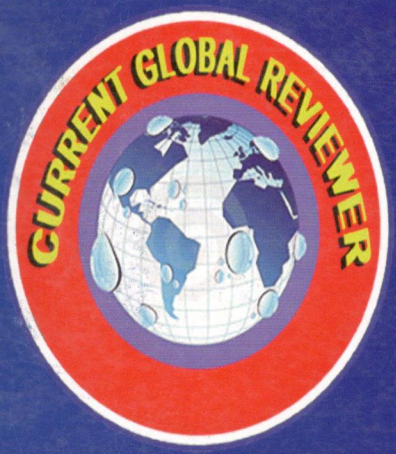

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

17-18

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**

Issue X Vol. VI ,April. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research Refereed Multidiciplanary Journal

Editor In Chief

Mr. Arun B. Godam

(Half Yearly) Nov. 2017 To Apr. . 2018

ISSUE X , Volume VI, April. 2018

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar, Latur, Dist. Latur 413512 (M.S.) India

Contact- 8149668999

Email-

hitechresearch11@gmail.com

Publisher

Shaury Publication

Kapil Nagar, Latur

Contact- 8149668999

Rs. 400/-

EXECUTIVE EDITORS

Dr. ChittaRanjan Panda
P.G. Deptt. Of Odia
Shailabala Women's Autonomous College , Cuttack – (Orissa)

B.J. Hirve
Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. PravinDiddeshwarShete
Dept. of Zoology, Maharashtra UdaygiriMahavidyalaya, Udgir, Dist. Latur

MaimanatJahanAra
Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

DrU.V.Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
ShriBhausahebVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. Hanumant Mane
R.Guide& Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Dr. SachinKadam
Dept. of Hindi
Nagarpalika Art D.J. Malpani Comm. & B.N. Sarda Sci. College,
Sangmner, Dist. Ahmadnagar (M.S.)

www.rjournals.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**
Issue X Vol. VI ,April. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	The Relation Between The Level Of Job Satisfaction And TypesOf Personality In Higher Secondary School Teachers	Smt. Geeta H. Inginshetty	1
2	Anxiety And Mental Health Of Chronic Patients	Dr. .AnilkumarTengli	5
3	Globalization And Social, Economical Development In India	Mr. Pawar S.S	10
4	Levels of agricultural Technology in Satara District : A Geographical Study	Dr. B.R.Shinde	13
5	"Comparative Study Of Anxiety Level Of Tribal And Non-Tribal Athletes"	Dr. Sunilkumar	16
6	"Effect of minor games on physical fitness of school going children"	Prof. Sughand Band	19
7	Indian Agriculture Sector Before and After Globalisation - An Analysis	Dr. MarotiTegampure, Dr. Amrita Sahu	24
8	हिन्दी उपन्यासो में अभिव्यक्त नारी - विमर्श	डॉ. संतोष पवार	31
9	मोहन राकेश के नाटकों में तात्विक विवेचन	डॉ. सचिन रमेशराव चोल	35
10	साहित्य आणि समाज सहसंबंध	डॉ. प्रा. गणेश लहाने	41
11	शिवाजी महाराजांचे मुस्लिम सहकारी	डॉ. आर. एस. पारवे	46
12	अश्क के नाटकों की पृष्ठभूमि	डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी	49
13	उस्मानाबाद जिल्ह्यातील कृषी उत्पादकतेचा भौगोलिक अभ्यास	Dr. F.R. Pawar	52

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**
Issue X, Vol.VI ,April. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

अश्क के नाटकों की पृष्ठभूमि

डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी
पदव्यूत्तर हिंदी विभाग,दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

-------- (12) ----------

हिंदी समस्या नाटकों के सन्दर्भ में एक विशेष बात यह देखने को मिलती है कि इसका आरंभ तो मिश्रजी के नाटकों से हुआ पर आगे चलकर वे खुद पाश्चात्य नाटककार इब्सन और शा के नाटकों से अधिक प्रभावित हुए उनसे प्रेरित होकर ही उन्होंने नवीन विषयों का चयन किया परिणामत: हिंदी का समस्या नाटक अपनी प्राचीन मान्यताओं और परंपराओं से अलग हो गया और वर्तमान जीवन की अनेकविध समस्याओं को लेकर ही नाटकों पर गहरा प्रभाव रहा है। पर गौर से देखने पर ज्ञात होगा कि हिंदी समस्या नाटकों का स्वरुप पाश्चात्य नाटकों से भिन्न रहा है। हमारी और उनकी समस्याएँ भिन्न भिन्न है। और फिर इब्सन, शा और गाल्सवर्दी जैसे पश्चिमी नाटककारों को सशक्त युनानी नाटक साहित्य की परंपरा मिली। उनकी जीवन दृष्टि और हमारी जीवन दृष्टि में बहुत बडा फर्क है। हिंदी समस्या नाटकों में यथार्थवादी विचारधारा तो अवश्य है पर उसका मूल स्त्रोत यह देश और इस देश की मिट्टी ही होनी चाहिए। अधिक तर भारतीय विद्वानों का मत है कि हिंदी समस्या नाटकों का मूल स्त्रोत भारतेंदु युगीन नाटक ही है। यह सभी स्वीकार करते है कि हिंदी साहित्य के नाटककारों ने पाश्चात्य नाटकों से प्रेरणा ली और उनसे बहुत कुछ ग्रहण भी किया, पर नाटकों में विचार, सोच और अनुभूतियाँ उनकी अपनी है। यह भी एक उल्लेखनीय बात है कि हिंदी समस्या नाटकों पर गांधीवादी विचार धारा और दर्शन का गहरा प्रभाव रहा है। इसी कारण हम यह भी देखते है कि हिंदी के समस्या नाटक अनास्थामूलक न होकर व्यवहारिक और आदर्शवादी है। समस्या नाटकों में रुढियों का तो विरोध हुआ ही है साथ ही अंधश्रध्दा और अंध विश्वासों का भी विरोध हुआ है। गांधीवादी विचारधारा और भारतीय तत्वज्ञान के प्रभाव के कारण ही हिंदी नाटकों में पाश्चात्य नाटककों की लहर आदर्श और भावना का तिरस्कार नहीं हुआ है। समस्या नाटक उसके उदाहरण है। हिंदी के समस्या नाटक दैनिक जीवन की समस्याओं से सम्बध्द होने के कारण यथार्थवादी है और उनका यथार्थवाद आन्तरिक चेतना के वास्तव भौतिकवाद और गांधीवाद की रचनात्मकता से निर्मित है। यही एक कारण है जिसमें हिंदी के समस्या नाटकों की तरह मात्र कोरी बौध्दिकता नही है।

हिंदी समस्या नाटकों के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों का यह भी मत है कि इन नाटकों में विचार तत्व को अधिक महत्व नहीं दिया गया है जब कि पाश्चात्य नाटकों में विचार अधिक महत्वपूर्ण है। यही बात समस्या नाटकों के पात्रों के विषय में भी कही गई है। विद्वानों का मत है कि हिंदी समस्या नाटकों के युवावर्ग के पात्रों में यह सजगता नहीं है जो पाश्चात्य समस्या नाटकों के पात्रें में है। हिंदी समस्या नाटकों के पात्र कई बार तो घुटन या विद्रोह में टूटकर बिखर जाते है या फिर घूट–घूट कर ही जीवन व्यतीत करना चाहते है। संभवत: यह समझौतावादी दृष्टिकोण का प्रभाव है जो सामान्य तथा हिंदी समस्या नाटककारों में दिखाई देता है। कहीं कहीं अश्क के नाटक इसमें मुक्ति पा सके जैसा कि उनके नाटक 'अलग अलग रास्ते' की प्रमुख नारी पात्र रानी है पर अश्क के ही 'स्वर्ग की झलक' नाटक में अशोक और राजेन्द्र जैसे पात्र यह साहस नहीं दिखा सके। पर साथ ही साथ यह भी स्वीकार करना पडेगा कि हिंदी समस्या नाटककारों ने शब्दों के संयाजन, अंक विभाजन और दृश्य विधान के बारीकियों को अच्छी तरह समझकर ही उसका प्रयोग किया है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी का समस्या नाटक प्राचीन नाट्य शिल्प को त्याग कर पाश्चात्य प्रभाव के नवीन नाट्य

के साथ ही सौन्दर्यबोध परिवर्तित होता गया और परिवर्तित विचारों के अनुरुप नाट्य क्षेत्र में विभिन्न प्रयोग होते रहे है। चरित्र चित्रण, कार्य और कथ्य के साथ नाटककार की अन्तर्मन की शक्ति भी नाटक का महत्वपूर्ण अंग बनी। अश्क के नाटक उनके परिवर्तित अन्तर्मन की शक्ति का ही परिचय कराते है। उनके नाटकों में मध्य वर्ग प्रमुख है। इस वर्ग की अन्तर्विरोध वृत्ति का स्वाभाविक चित्रण उन्होंने किया है। साथ ही अश्कजी ने मध्यवर्गीय जीवन की भिन्न भिन्न समस्याओं का विश्लेषण करते हुए उस वर्ग के तमाम प्रतिगामी तत्वों और अन्तर्विरोधों का उद्‌घाटन किया है। यद्यपि अश्कजीने मजदूर या श्रमिक वर्ग के जीवन को लेकर कोई नाटक नहीं लिखा। फिर भी अपनी रचनाओं में यत्रतत्र श्रमिक वर्ग का शोषण करनेवाले पूँजीवादी वर्ग की घातक प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। उनके नाटकों और एकांकियों में मध्य वर्ग के जीवन में पूँजीवादी प्रभावों से उत्पन्न विश्रृंखलता का चित्रण जहाँ हुआ है वहां मानवीय जीवन के उदात्त भावों का भी निरुपन हुआ है जो एक नई आशा और आकांक्षा जगाता है।

संदर्भ :

१) डॉ. धर्मवीर भारती : कैद और उडान की भूमिका व्याख्या से पृ. २६
२) भैरवप्रसाद गुप्त : नाटककार अश्क पृ. ४६१
३) जगदीशचन्द्र माथुर : नाटककार अश्क पृ. १४, १५
४) उपेन्द्रनाथ अश्क : स्वर्ग की झलक़ पृ. ०६

Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

Publisher
Shaurya Publication

www.rjournals.co.in